

दैनिक

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त

R

मुंबई हलचल

अब हर सच होगा उजागर

इरा रहा है CORONA

3 हफ्ते में ही भारत में 1 लाख से ज्यादा केस, 2600 से अधिक मौतें



**पिछले 24 घंटे में
कोरोना के 6535 नए
केस आए सामने**
देश में कोरोना के 80 हजार
से ज्यादा एक्टिव केस

संवाददाता

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस का आतंक जारी है। कोरोना के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए भारत में 25 मार्च से लॉकडाउन लागू है। बावजूद इसके कोरोना की रफ्तार थमने का नाम नहीं ले रही है। मंगलवार (26 मई) तक देश में कोरोना के 1 लाख 45 हजार 380 मामले सामने आ चुके हैं। और 4 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। (शेष पृष्ठ 3 पर)



आज से रेलवे
देगी रिफंड,
6 महीने के
भीतर ले
सकते हैं
रिफंड
(समाचार पृष्ठ 3 पर)

मुंबई में केईएम
हॉस्पिटल के कोरोना वार्ड
में तैनात कर्मचारी की मौत
**स्टाफ का
हंगामा**

बीएमसी हेल्प डेस्क के
22 कर्मचारी संक्रमित



एक दिन में मुंबई एयरपोर्ट पर
4852 यात्रियों ने सफर किया

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में मंगलवार तक कोरोना संक्रमितों की संख्या 52 हजार 667 हो गई। यहां एक दिन में 60 मरीजों की मौत हुई। इसके साथ ही इस बीमारी से जान गंवाने वालों का आंकड़ा 1695 हो गया। पिछले 24 घंटे में राज्य में 2436 नए संक्रमित मरीज सामने आए। एक दिन में रिकॉर्ड 1186 मरीज ठीक भी हुए। अब राज्य में 35 हजार 178 मरीज ही अस्पताल में भर्ती हैं। उधर, मुंबई के केईएम अस्पताल के कोरोना वार्ड में तैनात एक कर्मचारी की मौत के बाद मंगलवार को हॉस्पिटल के बाहर स्वास्थ्यकर्मियों, पैरामेडिकल स्टाफ ने हंगामा किया है। इनमें कई डॉक्टर भी शामिल हैं। (शेष पृष्ठ 3 पर)

संपादकीय

परिवहन की चुनौतियां

देश में ज्यादातर यात्राएं रद्द हैं, तो स्वाभाविक है, लेकिन किन्हीं जरूरी तय यात्राओं का आखिरी चरण में रद्द होना निंदनीय ही नहीं, दुःखद भी है। 25 मई को विशेष हवाई सेवा की शुरुआत हुई और पहले ही दिन 80 से ज्यादा फ्लाइट्स का रद्द होना न जाने कितने लोगों को परेशानी में डाल गया। अव्वल तो हवाई अड्डे पहुंचना ही टेढ़ी खीर है। भारी खर्च करके पहुंच भी गए, तो फ्लाइट का रद्द हो जाना व्यापक विफलता के सिवा और क्या है? कहना न होगा, इन दिनों यात्राओं के साथ हमने बहुत बुरा सुलूक करना शुरू कर दिया है। पैदल यात्रा हो या हवाई यात्रा हर जगह लोगों को परेशानियों से गुजरना पड़ रहा है, तो इसके लिए सिवाय प्रशासन के कोई और जिम्मेदार नहीं है। जिनकी यात्राएं रद्द हो गईं, उनके नुकसान की भरपाई कौन करेगा? बेशक, कोरोना काल में फ्लाइट के रद्द होने के कारण बढ़ जाएंगे। छोटे-छोटे कारणों से भी फ्लाइट को रद्द करना आम हो जाएगा। अतः यह बहुत जरूरी है कि जिनकी फ्लाइट रद्द हो गई, उनको अगली फ्लाइट से मंजिल तक पहुंचाया जाए। स्वास्थ्य जांच, सैनिटाइजेशन इत्यादि कुछ कारण हैं, जिनका महत्व बहुत बढ़ गया है। इसके अलावा, राज्य सरकारों को भी यह शक्ति मिली हुई है कि वे जब चाहें, अपने यहां विभिन्न कारणों से फ्लाइट को आने-जाने से रोक सकती हैं। जब तक कोरोना है, यह चिंता और चुनौती हमारे साथ रहने वाली है। आने वाले दिनों में एयरलाइंस संचालकों को ज्यादा चौकसी और सेवा भाव से काम करना है। लोग बहुत जरूरी होने पर ही यात्रा पर निकल रहे हैं, वे पर्यटन या कहीं स्नेह मिलन के लिए नहीं जा रहे हैं। जो यात्राएं जीवन या व्यापार के लिए बहुत आवश्यक हैं, अभी उन्हीं की जरूरत है। तो लोगों की यह मजबूरी एयरलाइंस के भी ध्यान में रहनी चाहिए, तभी कोरोना के समय में उनकी सार्थकता सिद्ध होगी। टैक्सी सेवा हो या रेल या हवाई सेवा, हर तरह की परिवहन सेवाओं को लोगों और देश की नई उम्मीदों पर मुकम्मल उतरना है। इन सेवाओं के संचालक जितनी संवेदना के साथ सक्रिय होंगे, उतने ही कम विवाद होंगे और लोगों को भी सुविधा होगी। मिसाल के लिए, ईद के दिन भी सुप्रीम कोर्ट को एयरलाइंस के खिलाफ सुनवाई करनी पड़ी है, तो यह कोई प्रशंसनीय बात नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने प्रशासन को भी याद दिलाया है कि एयरलाइंस की आर्थिक सेहत से ज्यादा जरूरी है, लोगों की स्वास्थ्य सुरक्षा। एयरलाइंस अपने फायदे के लिए किसी सीट को खाली नहीं छोड़ रहे हैं। जब यह चर्चा कोरोना की शुरुआत से ही हो रही है कि हवाई जहाज में बीच की सीट खाली रहेगी, तब हवाई जहाज में बीच की सीट खाली करवाने के लिए भला सुप्रीम कोर्ट को क्यों आगे आना पड़ा है? क्या आने वाले दिनों में रेल और बसों में भी बीच की सीट या बर्थ को खाली रखने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ेगा? यह बहुत संभलकर और नियोजित तरीके से आगे बढ़ने का समय है। जो महाराष्ट्र शुरुआत में हवाई सेवा के लिए तैयार नहीं था, वह भला क्यों तैयार हो गया?

एलएसी पर तपिश तेज

वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर तपिश तेज हो रही है। भारत और चीन की सैन्य टुकड़ियों के बीच टकराव के मामले बढ़ते जा रहे हैं। खासतौर से 2015 के बाद से ऐसे वाक्ये कुछ ज्यादा ही हुए हैं। इन तल्लियों को दूर करने के लिए किए प्रयासों का अभी तक कोई असर नहीं हुआ। चूंकि कोई भी पक्ष झुकने के लिए तैयार नहीं तो इस संकट के और बढ़ने का खतरा बना हुआ है। भारतीय रक्षा मंत्रालय के अनुसार चीनी अतिक्रमण के मामलों में भारी इजाफा हुआ है। केवल लद्दाख में ही चीनी अतिक्रमण के अप्रैल में 130 मामले देखने को मिले। पूर्वी लद्दाख के गलवान नदी क्षेत्र में भारत द्वारा सड़क निर्माण पर चीन की आपत्ति के बाद उसके सैन्य बल दुस्साहस दिखाने से बाज नहीं आ रहे, जबकि यह इलाका पूरी तरह भारतीय परिधि के भीतर ही आता है। चीन के विदेश मंत्री ने सड़क निर्माण को लेकर भारत को इन शब्दों में चेताया भी है कि चीनी सुरक्षा बल चीन-भारत सीमा पर शांति एवं स्थायित्व कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन अपनी मातृभूमि की संप्रभुता एवं सुरक्षा के लिए करारा जवाब देने के लिए तैयार भी।

दरअसल भारत-चीन सीमा का सीमांकन स्पष्ट नहीं और इस कारण एलएसी पर गाहे-बगाहे विवाद उठ खड़े होते हैं। इससे अक्सर दोनों देशों के सैनिक गफलत में एक दूसरे के इलाकों में पहुंच जाते हैं। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में दशकों से स्थानीय स्तर पर अस्थिरता बनी हुई है। हाल के वर्षों में सीमा पर संघर्ष बहुत आम हो गया है। हालांकि अमुमन ये संघर्ष स्थानीय स्तर पर ही होते हैं जिनका निपटारा भी स्थानीय कमांडरों द्वारा ही कर दिया जाता है।



इसमें 2017 के दौरान सिक्किम-भूटान सीमा पर डोकलाम में दोनों देशों के बीच 73 दिनों तक चले टकराव ने निश्चित ही बहुत तनाव पैदा कर दिया था। उसके बाद से भारतीय नीति निर्माता चीन को लेकर और अधिक चौकने लगे कि उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीनी राष्ट्रपति से सीधा संवाद कर इस समस्या का समाधान तलाशने के प्रयास भी किए। इस सिलसिले में दोनों नेताओं की पहली अनौपचारिक बैठक अप्रैल, 2018 में चीन के वुहान में हुई थी। तब दोनों देशों में सेनाओं के बीच संवाद बढ़ाने की पहल पर सहमति बनी थी ताकि आपसी समझ और समन्वय से सीमा पर हालात को बेहतर ढंग से संभाला जा सके। हालांकि उससे द्विपक्षीय संबंधों को तत्काल राहत जरूर मिली, लेकिन सीमा विवाद का कोई सिरा नहीं सुलझा।

सीमा पर ऐसे टकरावों के कई कारण हैं। एक तो सीमा को लेकर अपनी-अपनी अलग धारणा है। इससे भी महत्वपूर्ण पहलू यही है कि भारत ने अपनी सीमा की तरफ बुनियादी ढांचे के काम को तेजी दी है। इस कारण चीनी सैनिकों का उन जगहों पर भी

भारतीय सैनिकों से सामना हो रहा है जहां वे पहले उन्हें देखने के अभ्यस्त नहीं थे। भारतीय सेना की गश्त भी अतीत की तुलना में काफी प्रभावी हुई है। इसने भी चीनी सेना को कुपित किया है।

भारत और चीन के बीच यह टकराव तब बढ़ रहा है जब दोनों ही देश कोरोना वायरस के खिलाफ अपनी-अपनी मुहिम में जुटे हैं। हालांकि टकराव को इससे नहीं भी तो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी यानी सीपीसी की व्यापक रणनीति से जरूर जोड़कर देखा जा सकता है। दरअसल कोरोना से उपजी कोविड-19 महामारी के शुरुआती चरण में चीन के संदिग्ध रवैये को लेकर दुनिया भर में आंखें तरेरी जा रही हैं। ऐसी स्थिति में चीन सीमाओं पर अपने बाहुबल के जरिये दुनिया को एक संदेश देना चाहता है। इसमें नई दिल्ली का रवैया खासतौर से उसे चुभ रहा होगा जिसने न केवल कोरोना मामले की स्वतंत्र जांच के पक्ष में आवाज उठाई, बल्कि विश्व स्वास्थ्य संगठन में ताइवान को बतौर विश्लेषक कायम रखने के पक्ष में पैरवी भी की। इस पर सीपीसी का लाल-पीला होना स्वाभाविक है जिसकी एक तरह से उसने सीमा पर अभिव्यक्ति

भी की है। उधर अमेरिका भी चीन के खिलाफ लामबंद होता दिख रहा है। दक्षिण एवं मध्य एशियाई मामलों की निर्वर्तमान अमेरिकी मुख्य उप सहायक विदेश मंत्री एलिस वेल्स का कहना है कि चीन की करतूत में एक खास परिपाटी दिखती है। उनका कहना है कि चाहे दक्षिण चीन सागर हो, जहां हमने भारत के साथ कुछ साझा अभियान चलाए हैं या भारत की स्थल या हिंद महासागरीय सीमा, हर जगह चीन को करारा जवाब दिए जाने की जरूरत है। वहीं अमेरिकी कांग्रेस में चीन को लेकर अमेरिकी रणनीति शीर्षक के तहत एक रिपोर्ट जमा कराई गई है। इसमें उल्लेख किया गया है कि चीन अपने पड़ोसियों से किए गए वादों का उल्लंघन कर उन्हें सीमा पर सामरिक रूप से उलझाता है। इसमें पीत सागर, दक्षिण एवं पूर्वी चीन सागर, ताइवान स्ट्रेट और भारत-चीन सीमा जैसे उन क्षेत्रों का उल्लेख है जहां चीन अपनी ऐसी आक्रामकता दिखा रहा है। जहां तक नई दिल्ली का सवाल है तो अब उसके लिए यह मसला केवल भारत-चीन द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से आकलन करने का ही नहीं रह गया है, बल्कि उसे अपने गुणा-गणित में एक वैश्विक शक्ति के रूप में चीन की भूमिका को भी जोड़कर देखना होगा। मौजूदा टकराव अस्थायी रूप से तो खत्म हो सकता है, लेकिन सीपीसी को जब भी अपनी राजनीति में राष्ट्रभक्ति का तड़का लगाने की जरूरत महसूस होगी तब वह फिर से ऐसी कोई हांडी चढ़ाएगी। ऐसे में भारत के पास स्वयं को आंतरिक रूप से मजबूत बनाकर चीन के खिलाफ क्षमताएं बढ़ाने और मजबूत विदेशी साझेदारों को अपने साथ जोड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

कोरोना संकट दुनिया भर में लोकतंत्र

आज जब कोरोना संक्रमण से मनुष्य, समाज और राष्ट्रों के व्यवहार में गंभीर परिवर्तन आ रहा है, तब लोकतंत्र और राजनीति में भी बदलाव अपरिहार्य है। अभी सभी बदलावों का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता, लेकिन कुछ प्रवृत्तियां स्पष्ट हैं। जहां अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली और स्पेन जैसे लोकतांत्रिक देश कोरोना संकट से जूझने में असफल रहे, वहीं कुछ गैर-लोकतांत्रिक साम्यवादी देशों जैसे चीन, उत्तर कोरिया और वियतनाम आदि ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया है। जब चुनाव मानव सुरक्षा और मानवाधिकारों में करना हो तो साम्यवादी देशों ने सुरक्षा को तरजीह दिया भले ही उसके लिए उनको अपने लोगों की स्वतंत्रताओं को कुचलना पड़ा हो। बहरहाल कोई भी देश हो, हर जगह एक ही चिंता रही-जान है तो जहान है अर्थात्



सुरक्षा सर्वोपरि, शेष सब गौण। अन्य लोकतांत्रिक देशों में भी जब लोगों, खास तौर पर गरीबों और वंचितों को सुरक्षा और स्वतंत्रता में चुनाव करना पड़ा है तो उन्होंने सुरक्षा को ही चुना। अपवादों को छोड़ लगभग 130 करोड़ लोगों ने भारत में लॉकडाउन के दौरान आपदा-प्रबंधन कानून और महामारी कानून के अंतर्गत सरकार की बढ़ती शक्तियों और अपनी घटती स्वतंत्रता को स्वेच्छ से स्वीकार किया। यानी आपदाकाल में लोगों ने स्वतंत्रता की अपेक्षा सुरक्षा

को ज्यादा महत्व दिया। इससे स्पष्ट है कि भविष्य में हमें राज्य की नैतिक स्थिति का पुनर्निर्धारण करना होगा और नए सिरे से परिभाषित करना होगा कि राज्य को कितनी शक्ति दी जाए और व्यक्ति को कितनी स्वतंत्रता? संभव है स्वयं व्यक्ति ही राज्य को ज्यादा शक्ति देने का प्रस्ताव कर उससे बेहतर सुरक्षा की अपेक्षा करे। चौथी-पांचवीं शताब्दी ईसा-पूर्व गौतम बुद्ध और 16-18वीं शताब्दी में यूरोपीय विचारक हॉब्स, लॉक, रूसो के अनुसार व्यक्तियों ने अपनी सुरक्षा के लिए ही संविदा द्वारा राज्य का निर्माण किया। अतः लोकतंत्र के चरित्र में प्रथम बदलाव यह होगा कि स्वतंत्रता और अधिकार जैसी अवधारणाओं पर सुरक्षा के पहरेदार के रूप में अर्ध-अधिनायकवादी राज्य का अभ्युदय होगा जो लोकतंत्र की वर्तमान अवधारणा को बदल देगा।

महाराष्ट्र में फिर सियासी हलचल

इस बार भी उसके केंद्र में शरद पवार, क्या फिर चौंकाने वाले हैं एनसीपी चीफ

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में सियासी हलचल तेज है। इसके केंद्र में हैं एनसीपी चीफ और 'राजनीति के चाणक्य' माने जाने वाले शरद पवार। मंगलवार को उन्होंने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे से मुलाकात की। एक हफ्ते में दोनों नेताओं की यह दूसरी मुलाकात है। लेकिन हलचल तो पैदा हुई उनकी एक दिन पहले की मुलाकात से। वह सोमवार को गवर्नर भगत सिंह कोश्यारी से मिले, जिसके बाद ठाकरे सरकार के भविष्य को लेकर तमाम तरह की अटकलें शुरू हो गईं। हालांकि, शिवसेना और एनसीपी दोनों ही सब कुछ ठीक



होने का दावा कर रही हैं लेकिन पवार तो पवार हैं, उन्हें समझना इतना आसान भी कहा है। चौंकाना शरद पवार की जैसे फितरत है। 1978 में जब पवार 38 साल के युवा थे तो महाराष्ट्र की वसंत दादा पाटिल सरकार को गिराकर राजनीतिक पंडितों को चौंका दिया था। जनता पार्टी के समर्थन से वह तब महाराष्ट्र के सबसे युवा मुख्यमंत्री बने। उसके बाद जो हुआ वह इतिहास है। तब से ही पवार महाराष्ट्र और देश के सियासी फलक पर छाए हुए हैं। 3 बार मुख्यमंत्री, केंद्र में रक्षा मंत्री से लेकर मनमोहन सरकार में लगातार 10 सालों तक कृषि मंत्री तक रहे।

2014 में फडणवीस सरकार को समर्थन का ऐलान

शरद पवार को यूँ ही राजनीति का चाणक्य नहीं कहा जाता। 2014 में बीजेपी और शिवसेना की राहें अलग हो गईं। दोनों ने अलग-अलग महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लड़ा। बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। बीजेपी के देवेंद्र फडणवीस ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। पवार ने राज्य में 'राजनीतिक स्थिरता' के लिए बीजेपी को समर्थन का ऐलान कर दिया। यह बात दीगर है कि एनसीपी और बीजेपी में गठबंधन बनता देख शिवसेना फिर से बीजेपी के साथ आ गई और फडणवीस सरकार में बतौर जूनियर पार्टनर शामिल हो गई।

पिछले साल भी महाराष्ट्र के सियासी ड्रामे के केंद्र में थे पवार

बात पवार के राजनीतिक कौशल की हो रही है तो पिछले साल का महाराष्ट्र का सियासी ड्रामा कोई कैसे भूल सकता है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी-शिवसेना गठबंधन को स्पष्ट बहुमत मिला था लेकिन सीएम पद को लेकर पंच ऐसा फंसा कि सरकार नहीं बनी और राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। नवंबर में अचानक राष्ट्रपति शासन हटा दिया गया और फडणवीस ने सीएम पद की शपथ ली।

1999 में कांग्रेस से अलग, बाद में उसी के साथ सरकार

पवार ने 1987 में फिर से कांग्रेस में वापसी की। जून 1988 से जून 1991 और मार्च 1993 से मार्च 1995 तक फिर से महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे। बीच में जून 1991 और मार्च 1993 तक देश के रक्षामंत्री की जिम्मेदारी भी निभाई। वह कांग्रेस के चोटी के नेताओं में गिने जाने लगे लेकिन 1999 में उन्होंने कांग्रेस को फिर चौंकाया। सोनिया गांधी के विदेशी मूल के मुद्दे पर उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का गठन किया। बाद में उसी साल जब महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव हुए तो पवार ने राजनीतिक पंडितों को फिर चौंकाया। जिस कांग्रेस से अलग हुए उसी के नेतृत्व में सूबे में गठबंधन सरकार बनाई।

किसका था स्क्रिप्ट? अजीत की डेप्युटी सीएम के तौर पर वापसी से गहराया रहस्य

महाराष्ट्र की सियासत में भूचाल आ गया। इसके पीछे शरद पवार के दिमाग को कहा जाने लगा। हालांकि बाद में बहुत तेजी से नाटकीय घटनाक्रम हुए। फडणवीस को इस्तीफा देना पड़ा और आखिरकार उद्धव ठाकरे की अगुआई में शिवसेना, कांग्रेस और एनसीपी की महाविकास अघाड़ी सरकार बनी। शरद पवार इस सरकार के शिल्पी बनकर उभरे। बाद में अजीत पवार की ठाकरे सरकार में डेप्युटी सीएम के तौर पर वापसी हुई। अभी तक कोई नहीं समझ पाया कि अजीत पवार के फडणवीस के साथ सरकार बनाने के पीछे कौन था? क्या वाकई अजीत पार्टी का मूड भांप नहीं पाए या फिर सारा स्क्रिप्ट शरद पवार का लिखा हुआ था? अजीत की डेप्युटी सीएम के तौर पर वापसी ने इस रहस्य को और गहरा दिया।

आज से रेलवे देगी रिफंड, 6 महीने के भीतर ले सकते हैं रिफंड

मुंबई। यात्रियों की सुविधा के लिए भारतीय रेलवे ने एक जून, 2020 से शुरू होने वाली 100 जोड़ी ट्रेनों के साथ चरणबद्ध तरीके से यात्री ट्रेन सेवाओं को बहाल करने का फैसला लिया है। इस निर्णय के साथ नामांकित स्टेशनों पर चयनित यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस) के आरक्षण काउंटर्सों का कार्य 22 मई से फिर से शुरू हो चुका है। अब, इसी क्रम में पश्चिम रेलवे ने लोकडाउन के कारण रद्द की गई यात्री ट्रेनों के पीआरएस टिकटों की रिफंड अदायगी भी फिर से शुरू करने का फैसला किया है। पश्चिम रेलवे के मुंबई डिवीजन में यात्री अपने पीआरएस टिकटों की रिफंड अदायगी 27 मई से पा सकेंगे। जानकारी के मुताबिक, चर्चगेट, मुंबई सेंट्रल और वसई रोड स्टेशनों के चयनित पीआरएस काउंटर्सों पर यात्रियों द्वारा नकद या प्वाइंट ऑफ सेल (पीओएस) मशीनों के माध्यम से विशेष ट्रेनों में आरक्षित टिकट बुक करने का कार्य 22 मई से शुरू हो चुका है। इनके अलावा, 27 मई से मुंबई मंडल के अंधेरी, और बोरीवली पर भी बुकिंग कार्य की शुरुआत की जाएगी। इन सभी स्टेशनों पर रिफंड की भी सुविधा शुरू होगी।

रेलवे ने की अपील, न करें जल्दबाजी

निर्धारित यात्रा की तारीख से 180 दिनों के भीतर रिफंड लेने की सुविधा रेलवे ने दी है। पश्चिम रेलवे ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि रद्द की गई ट्रेनों के लिए रिफंड का लाभ उठाने के लिए कोई जल्दबाजी न करें और सामाजिक दूरी के मानदंडों और स्वास्थ्य प्रोटोकॉल का पालन करते हुए भीड़भाड़ से बचें।

(पृष्ठ 1 का शेष)

डरा रहा है कोरोना

पहले और दूसरे लॉकडाउन में जहां सरकार की ओर से रियायतें कम दी गई थीं तो कोरोना के मामले भी काबू में थे, लेकिन तीसरे और चौथे लॉकडाउन में जैसे ही छूट बढ़ाई गई वैसे ही इस महामारी के मामले भी बढ़ गए। कोरोना के मामले किस रफ्तार से बढ़ रहे हैं इसका अंदाजा आप इन आंकड़ों से लगा सकते हैं। आज से तीन हफ्ते पहले यानी 4 मई को भारत में करीब 43,000 केस के साथ 1,400 मौत रिपोर्ट हो चुकी थीं। और अभी 1 लाख 45 हजार 380 मामले हैं और 4 हजार 167 लोगों की मौत हो चुकी है। यानी तीन हफ्ते में देश में 1 लाख 2 हजार मामले सामने आए और 2600 से ज्यादा लोगों ने दम तोड़ा। कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य महाराष्ट्र है। यहां पर 52 हजार से अधिक कंफर्म केस और करीब 1700 लोगों की मौत हुई है तो वहीं तमिलनाडु में 17 हजार से अधिक कुल मरीज हैं। मध्य प्रदेश में कुल मरीजों का आंकड़ा 6859 है, जिसमें 300 लोगों की मौत हो चुकी है। उत्तर प्रदेश में भी कुल कंफर्म केस की संख्या 6532 हो गई है, जिसमें 165 लोगों की मौत हो चुकी है। बिहार में मरीजों का आंकड़ा 2730 है, जिसमें 13 लोगों की मौत हो चुकी है। दिल्ली में भी कुल कोरोना मरीजों का आंकड़ा 14 हजार के पार पहुंच गया है। यहां अब तक 276 लोगों की मौत हो चुकी है। राजस्थान में कुल कोरोना मरीजों का आंकड़ा 7300 है, जिसमें 167 लोगों की मौत हो चुकी है। भारत के करीब 16 प्रतिशत जिलों में सात दिनों के अंदर कोरोना वायरस के केस 100 फीसदी से ज्यादा बढ़े हैं। इनमें से करीब आधे जिले ग्रीन जोन में हैं। हालांकि 717 जिलों के ये आंकड़े 20 मई तक के हैं। विशेषज्ञों और स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि यह उछाल मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों से अपने घरों को लौट प्रवासी मजदूरों की वजह से आया है। पिछले

24 घंटे में कोरोना के 6 हजार 535 नए मामले सामने आए हैं और 146 लोगों की मौत हो चुकी है। अभी देश में 80 हजार से अधिक एक्टिव केस हैं। महाराष्ट्र में कुल संक्रमितों का आंकड़ा 52 हजार 667 हो गया है, जिसमें 1695 की मौत हो चुकी है।

मुंबई में केईएम हॉस्पिटल के कोरोना वार्ड में...

इनका आरोप है कि 4 दिन से बीमार चल रहे स्वास्थ्यकर्मी ने छुट्टी के लिए कई बार अर्जी दी, जो मंजूर नहीं की गई। रविवार रात उनकी मौत हो गई। मौत के बाद कर्मचारी का कोरोना टेस्ट किया गया है। रिपोर्ट का इंतजार है। प्रदर्शन कर रहे स्वास्थ्यकर्मीयों की मांग है कि मृतक के परिवार को नौकरी और मुआवजा भी दिया जाना चाहिए। फिलहाल, उनका शव अस्पताल की मोर्चरी में रखा है। कर्मचारियों का यह भी कहना है कि हॉस्पिटल की मोर्चरी फुल हो चुकी है। इसलिए बॉडी को फर्स्ट फ्लोर के गलियारे में रखा जा रहा है। मुंबई में हर 100 सैंपल टेस्ट करने पर 32 लोग कोरोना पॉजिटिव मिल रहे हैं। 13 मई से 23 मई तक शहर में इस दौरान 43 हजार 25 लोगों की टेस्टिंग की गई। इनमें से 13 हजार 853 लोग संक्रमित मिले। मुंबई में अब तक 31 हजार से अधिक संक्रमित हो चुके हैं। करीब 14 हजार मामले सिर्फ 10 दिन में आए हैं। रूस की राजधानी मास्को के बाद मुंबई में ही रोज सबसे ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। 22 मई को मुंबई में 1751 मामले सामने आए थे। उस दिन मास्को में 2988 संक्रमित मिले थे। महाराष्ट्र में सोमवार को 60 संक्रमितों की मौत हुई। इनमें से अकेले मुंबई में ही 38 लोगों ने दम तोड़ा। यानि राज्य की 60.5% मौतें सिर्फ मुंबई में ही हुईं। मुंबई में अब तक 1026 कोरोना संक्रमितों की मौत हो चुकी है। देश में अब तक इस बीमारी से 4174 लोगों ने जान गंवाई है। यानी इनमें से 25% मौत सिर्फ मुंबई में हुई हैं। महाराष्ट्र में 52 हजार 667 कोरोना संक्रमित हैं।



क्या यह महज इतफाक है या सत्ताधीसों का बुना जाल?

संवाददाता

एक ओर जहां पूरा विश्व कोरोना वायरस से लड़ने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ हमारे देश में इस महामारी से बचने के लिए कम और राजनीति करने में ज्यादा व्यस्त हैं। देश में लगातार कोरोना के मरीजों की संख्या में इजाफा हो रहा है। इस संकट की घड़ी में पक्ष और विपक्ष को एकजुट होकर इस कोरोना जैसी महामारी से लड़ाई लड़ना चाहिए था न कि एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप। शुरुआत में तो अपने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में लॉकडाउन कर जनता से खूब थाली बजवाई और दीपक भी जलवाये और लोगों से अपील की कि आप सब घर पर ही रहें, आप लोगों की देखभाल सरकार करेगी, आप चिंता न करें, सरकार आपकी चिंता करेगी। देश में कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए इसके लिए पर्याप्त व्यवस्था की गयी है। अपने इन्हीं प्रवचन की वजह से पूरे विश्व में सूर्र्हियां बंटोरी और इसका फायदा भी हुआ। कोरोना वायरस से लड़ने के लिए विश्व बैंक से भारत सरकार को एक मिलियन डालर का कर्ज भी मिला। इसके अलावा प्रधानमंत्री राहत कोष में भी रूपयों की बरसात हुई। प्रधानमंत्री ने भी देश के लोगों के लिए करोड़ों रुपये के पैकेज का ऐलान तो कर दिया। परंतु क्या उन गरीब श्रमिकों व जरूरतमंदों को इसका फायदा मिला या मिलेगा ? देश के बेबस, लाचार श्रमिकों का लॉकडाउन के बाद उनकी जिंदगी बद से बदतर हो गई है। अब श्रमिकों को लेकर राजनीति गर्मा गई है। एक तरफ सूर्य की गर्मी और दूसरी तरफ राजनीति की गर्मी। इन दोनों की गर्मी से श्रमिक बेचारे पिघल रहे हैं। अपने देश के नेता व पूंजीपतियों को ऐसा लगता है कि जैसे ये सभी श्रमिक हिंदुस्तान के नहीं बल्कि किसी अन्य देश के जंगल में से हजारों की संख्या में जानवर आकर



अपने देश के सड़कों पर झुंड बनाकर घूम रहे हैं। अब इन जानवर रूपी श्रमिकों को लेकर टीवी चैनलों पर अपने देश के नेता बहस कर रहे हैं और एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं कि ये आपकी गलती है जो बंधे हुए जानवर (मजदूर) आज सड़कों पर विचरण कर रहे हैं, वो आपकी गलती है। अरे भाई आज जिस सिंहासन पर बैठे हो और जो पूंजीपति अपने महलों में आनंद उठा रहे हैं, वो इन्हीं मजदूरों की देन है। कुछ तो शर्म करो आज जो कुछ भी हो इन्हीं की बदौलत हो।

देश में अब एक अलग तरह की राजनीति चल रही है। देश में राजनीतिक उथल-पुथल के कई दौर देखने को मिले हैं। लेकिन इन दिनों राजनीतिक हालात में जो नई प्रवृत्ति पनपी है, वह कई सवालों को जन्म देती है। सही और गलत के फासले को तय करने का पैमाना आखिर क्या हो ? आज दो विचारधाराओं की लड़ाई में सच कहीं खोता नजर आ रहा है और झूठ तेजी से फैल रहा है। बदलते राजनीतिक दौर में हम किसी न किसी के अनुयायी या यूँ कहें कि अंध भक्ति के शिकार होते जा रहे हैं। किसी ने सरकार की प्रशंसा की और उसके काम-काज को सराहा तो वह सरकार का वफादार कहलाने लगा और अगर किसी

में फंसे हुए श्रमिक इन्हें सैलानी लगते हैं, अरे ऐसा बोलने से पहले डूब मरते तो अच्छा था। वो तो भला हो उन सामाजिक संगठनों का जिन्होंने ने लोगों को भोजन व अनाज के किट्स वितरित किए, नहीं तो आज जितना कोरोना से लोग मरे हैं, उससे कहीं ज्यादा लोग भूख से मर जाते। लोग कोरोना संक्रमण और मौत के काउंट डाउन के बीच अपने भविष्य को लेकर फिक्रमंद जरूर हैं।

मुंबई एवं गुजरात के बार्डर से हजारों मजदूर अपने गांव की तरफ निकल गए हैं। कोई पैदल गया, तो कोई सायकल से, तो कोई अपना रिक्शा ही लेकर निकल पड़ा, यहां तक कि जिसको जो भी साधन मिला उससे गया। इसमें से बहुत मजदूर ऐसे भी थे जिनकी जेब में न तो पैसे थे और न ही घर पहुंचने के बाद खाने के लिए राशन। जिन कंपनियों में ये सभी मजदूर काम करते थे, वे सभी कंपनियों के ठेकेदार इन मजदूरों का पगार भी नहीं दिया। नगे पैर भूखे-प्यासे समूहों में पीड़ा से कराहते हुए ये लोग निकल पड़े। रात हो या दिन केवल इस विश्वास के साथ कि उन्हें किसी तरह अपने घर पहुंचना है। किसी तरह सरकार ने श्रमिक स्पेशल ट्रेनें चलाई और इन श्रमिकों को लेकर ट्रेनें चली भी लेकिन वो भी रास्ता भटक गई हैं। कई दिनों से लोग भूख-प्यासे ट्रेनों में ही फंसे हुए हैं। रेलवे की इतनी बड़ी लापरवाही समझ से परे है। अभी भी लाखों की संख्या में लोग और भी हैं जो घर जाना चाहते हैं। ये सभी मजदूरों के पास किराए के घर में बैठकर कोरोना वायरस से जंग जीतने के लिए कोई विकल्प नहीं है। लेकिन अब इन मजदूरों को लेकर भी राजनीति शुरू हो गई है। महाराष्ट्र में तो लोगों का तो बुरा हाल है। लोग गांव जाना चाहते हैं लेकिन केंद्र और राज्य सरकारों के बीच आरोप-प्रत्यारोप के बीच में फंसे हुए हैं।



संवाददाता

सहारनपुर। कोरोना कोविड 19 की वैश्विक महामारी की वजह से सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन है लॉकडाउन की

वजहा से सबसे ज्यादा प्रभावित प्रवासी मजदूर हो रहे जो रोजी रोटी कमाने के लिए अपने वतन से दूर दराज प्रदेशों में गये हुए है लॉकडाउन का चौथा फेज चल रहा है चोथे

लॉकडाउन का पालन करते हुए मनाई गई ईद

संवाददाता

टाण्डा (रामपुर)। लॉकडाउन के चलते ईद का चाँद देखे जाने वालों की संख्या रही कम, ईद का चाँद नजर आते ही हर्षोल्लास के साथ छाई मायूसी ईद की नमाज पांच व्यक्तियों को लेकर मस्जिदों में की गई अदा, रमजान माह के चलते घरों के अंदर रहकर की गई इबादत, कानून एवं शरीयत दोनों का किया गया पालन, ईद के शुभ अवसर पर लॉकडाउन का पालन करते हुए नहीं मिल सके एक दूसरे से गले।

कोरोना वायरस लॉकडाउन के चलते रमजान का पूरा महीना अपने अपने घरों के अंदर रहकर ही गुजार दिया ईद का चाँद नजर आते ही लॉकडाउन के चलते देखने वालों की संख्या काफी कम नजर आई। मस्जिदों में दुआ मांगे जाने का सिल्सिला लगातार जारी रहा ईद की नमाज जमा मस्जिद, शाही मस्जिद, थाने वाली मस्जिद, मोती मस्जिद आदि में अदा की गई। ईद मनाये जाने को लेकर लोगों में मायूसी छाई रही इसी के साथ साथ कानून एवं शरीअत दोनों का पालन किया गया। अधिक संख्या में लोगों के एक साथ जमा न होने को लेकर भाईचारा एवं सादगी के साथ ईद का पर्व मनाया गया, एस.डी.एम. गौरव कुमार व उनके अन्य कर्मचारियों सहित कोतवाल माधो सिंह बिष्ट ने पुलिस बल को साथ लेकर नगर का भ्रमण किया गया नगरीय लोगों द्वारा सम्मानता को देख अवसर पर सी.ओ स्वार ने ईद की मुबारक बाद पेश की तथा जनता को सराहनीय बताया गया।



विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी- महामारी का दूसरा दौर आएगा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने उन देशों को चेतावनी दी है जहां कोरोना संक्रमण के मामले कम हो रहे हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक- जहां मामले घट रहे हैं, वहां ये अचानक बढ़ भी सकते हैं। इसलिए सिर्फ देखते न रहें। सरकारों को चाहिए कि वे महामारी रोकने के उपयों के साथ तैयार रहें। डब्ल्यूएचओ के इमरजेंसी प्रमुख डॉ.

माइक रेयान ने कहा, दुनिया कोरोना संक्रमण की पहली लहर से जूझ रही है। कई देशों में मामले घट रहे हैं। मध्य और दक्षिण अमेरिका, दक्षिण एशिया और अफ्रीका में मामले बढ़ रहे हैं। रेयान ने कहा, महामारी वेब्स यानी लहरों के रूप में आती हैं। इसका मतलब है कि ये इसी साल उन क्षेत्रों में दोबारा आ सकती है, जहां मामले थम रहे हैं।

अगर वर्तमान में चल रहे संक्रमण के पहले दौर को रोक भी लिया गया तो भी अगली बार संक्रमण की दर बेहद तेज हो सकती है। डॉक्टर रेयान के मुताबिक, यह समझने की जरूरत है कि महामारी दोबारा उभर सकती है। हम सिर्फ ये मानकर नहीं बैठ सकते कि आंकड़ों में कमी आ रही और संकट कम हो रहा है। इसका दूसरा दौर भी

आ सकता है। उन्होंने कहा, यूरोप और उत्तरी अमेरिका को बचाव की कोशिश करते रहने चाहिए। लगातार जांच के साथ बचाव की रणनीति बनाते रहने की जरूरत है, ताकि दूसरे दौर पर पहुंचने से खुद को रोक सकें। कई यूरोपीय देशों और अमेरिकी राज्यों ने लॉकडाउन के साथ उन उपायों से भी मुह मोड़ लिया है जो संक्रमण को रोकते हैं।

राहुल गांधी बोले- कोरोना जब तेजी से फैल रहा, तब हम लॉकडाउन हटा रहे अब तक के बंद का मकसद नाकाम रहा

देश नतीजे भुगत रहा

संवाददाता

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मीडिया से बात की। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश है जहां कोरोनावायरस तेजी से बढ़ने के बावजूद लॉकडाउन हटया जा रहा है। लॉकडाउन का मकसद फेल हो चुका है, देश इसके नतीजे भुगत रहा है। राहुल ने कहा कि चार फेज के लॉकडाउन के बाद भी वे नतीजे नहीं मिले जिनकी उम्मीद प्रधानमंत्री कर रहे थे। राहुल ने कहा कि प्रधानमंत्री पहले फ्रंट फुट पर खेल रहे थे, लेकिन लॉकडाउन फेल हुआ तो बैकफुट पर चले गए। उन्हें फिर से फ्रंट फुट पर आना चाहिए। प्रधानमंत्री और उनके प्रमुख सलाहकारों ने कहा था कि मई के आखिर तक कोरोनावायरस का असर घटने लगेगा, लेकिन ऐसा तो नहीं हो रहा। अब सरकार बताए कि आगे क्या प्लान है? लॉकडाउन खोलने की स्ट्रेटजी में प्रवासियों और राज्यों



की मदद के क्या इंतजाम हैं? राहुल का कहना है कि सरकार ने आर्थिक पैकेज में जो दिया, उससे कुछ नहीं होने वाला। लोगों के हाथों में पैसा पहुंचना चाहिए। आम लोगों और इंडस्ट्री को आर्थिक मदद नहीं मिली तो नतीजे खतरनाक होंगे। केंद्र तक कोरोनावायरस का असर घटने चाहिए। इसके बिना कांग्रेस शासित प्रदेशों को दिक्कतें आएंगी। चीन से चल रहे तनाव पर राहुल ने कहा कि सरकार को ये साफ बताना चाहिए



संवाददाता

टाण्डा (रामपुर)। मौसम का मिजाज तेज गरम होने के साथ-साथ तापमान में तेजी आने कारण लोग बेहोल रह गये है तेज धूप एवं लॉकडाउन के चलते लोगों का घरों से निकलना दुभर हो गया है। लोग अपने अपने घरों के अंदर बंद हैं जिसके चलते लॉकडाउन का भी कड़ाई के साथ पालन किया जा रहा है जैसे कि

अन्य देशों में कोरोना वायरस की महामारी फैले जाने को लेकर हजारों की संख्या में मोत का शिकार हो रहे है लापरवाही के चलते इसके नतीजे भी गम्भीर हो सकते हैं पालन के साथ साथ पुलिस प्रशासन को भी राहत मिली है जनजीवन अस्त व्यस्त होकर रह गया है तेज धूप के चलते भीषण गर्मी से अभी राहत मिलने के आसार दिखाई नही दे पा रहे हैं।

महंगा हुआ टर्म प्लान, बीमा कंपनियों ने कहा- डेथ क्लेम में बढ़ोतरी है वजह



संवाददाता

टर्म इश्योरेंस की डिमांड बढ़ने के साथ ही प्रीमियम भी महंगा होता जा रहा है। लगभग सभी लाइफ इश्योरेंस कंपनियों ने प्रीमियम में इजाफा कर दिया है। ज्यादातर कंपनियों ने टर्म प्लान के प्रीमियम में 20 फीसदी तक बढ़ोतरी कर दी है। कुछ कंपनियों ने टर्म प्लान के प्रीमियम में अभी इजाफा नहीं किया है, लेकिन अगल दो से तीन महीने में ये कंपनियां भी प्रीमियम बढ़ा सकती हैं। प्रीमियम में बढ़ोतरी 20 से 40 फीसदी तक हो सकती है। यानी इस साल बीमा कंपनियां 40 फीसदी तक प्रीमियम बढ़ा सकती हैं। बीमा कंपनियों का कहना है कि कवरेज के स्वरूप में बदलाव की वजह से प्रीमियम में बढ़ोतरी का फैसला लिया गया है। इसके अलावा पिछले एक साल में टर्म प्लान के डेथ क्लेम में भी इजाफा हुआ है। खासकर क्लेम पैटर्न में बदलाव से बीमा कंपनियों के कारोबार पर असर पड़ा है। जिससे अब प्रीमियम में इजाफा किया जा रहा है। हालांकि बढ़ा हुआ प्रीमियम का नए बीमा धारकों पर लागू होगा। यानी नए ग्राहकों को बढ़ा हुआ प्रीमियम पेमेंट भरना पड़ेगा। जबकि पुराने ग्राहकों पर इस बढ़ोतरी का असर नहीं पड़ेगा।

ये हैं भारत की सबसे खूबसूरत जगहें

देश-विदेश में घूमने-फिरने के लिए बहुत-सी खूबसूरत जगहें हैं। लोग भी अक्सर खूबसूरत जगहों पर ही घूमने के शौकिन होते हैं। लॉग वीकेंड का प्लान बनाते समय भी लोग ऐसी जगहों की तलाश में रहते हैं जहां उन्हें देखने के लिए कुछ अलग और खूबसूरत सा मिले। आज हम आपको भारत की कुछ ऐसी खूबसूरत जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। तो अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं तो आपको कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं। परिवार या पार्टनर के साथ घूमने के लिए भारत की यह जगहें एकदम बेस्ट हैं।

1. जम्मू-कश्मीर, ड्रांस

लद्दाख का प्रवेश द्वार माना जाने वाला यह स्थान कारगिल एरिया में स्थित है। यह एशिया की दूसरी सबसे ठंडी जगहें मानी जाती है। यहां के पहाड़ों की खूबसूरती हर किसी का दिल जीत लेती है।

2. सिक्किम, युमयंग घाटी

'फूलों की घाटी' की घाटी कही जाने वाली इस जगहें पर घूमने के लिए कई



टूरिस्ट आते हैं। इस मौसम में घूमने के लिए यह जगहें सबसे बेस्ट हैं। इन महीनों पर आप यहां अलग-अलग तरह के फूल देख सकते हैं।

3. चेरापूंजी, नोहकलिखलि झरना

चेरापूंजी में स्थित यह झरना बेहद खूबसूरत है। इस शांत झरने की खूबसूरती का मजा लेने के लिए हर साल देश-विदेश से कई टूरिस्ट आते हैं।

4. हिमाचल प्रदेश, खानजरा

हिमाचल प्रदेश के इस शहर को 'भारत का स्विटजरलैंड' भी कहा जाता है। एशिया के इस शहर में आप झीलें, पहाड़, जंगल और खूबसूरत वादियों का मजा ले सकते हैं।

5. तमिलनाडु, होगेनकल झरना

कावरी नदी में से होकर निकलने वाला इस झरना का दृश्य बेहद सुंदर होता है। भारत का नियाग्रा फॉल कहा जाने वाले इस झरने पर खूबसूरत घाटी का मजा ले सकते हैं।

मुंबई हलचल राशिफल

-आचार्य परमानंद शास्त्री

मेघ: प्रयास सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। धन प्राप्ति सुगम होगी। प्रतिद्वंद्वी सक्रिय रहेंगे। कुसंगति से हानि होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा।

वृष: शुभ समाचार मिलेंगे। पुराने ईस्ट मित्रों से मुलाकात होगी। प्रसन्नता रहेगी। मान बना रहेगा। शत्रुओं से भय रहेगा। भागदौड़ रहेगी।

मिथुन: रोजगार में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। जोखिम न लें। शत्रु सक्रिय रहेंगे। कुसंगति से बचें।

कर्क: कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। अप्रत्याशित खर्च होंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। वाणी पर नियंत्रण आवश्यक है। हानि संभव है।

सिंह: व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। प्रमाद न करें। लाभ के अवसर हाथ आएं।

कन्या: जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कानूनी बाधा दूर होगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। अस्वस्थता से बाधा संभव है। वरिष्ठजनों से संबंध बढ़ेंगे।

तुला: प्रतिद्वंद्वी सक्रिय रहेंगे। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। लाभ होगा। झड़पों से दूर रहें।

वृश्चिक: अध्यात्म में रुचि रहेगी। कोर्ट व कचहरी के काम निबटेंगे। धन प्राप्ति सुगम होगी। पुराना रोग परेशान कर सकता है।

धनु: चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि तथा बाधा संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। लेन-देन में सावधानी रखें।

मकर: बेवैनी रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कानूनी बाधा दूर होगी। धनार्जन होगा। लेन-देन में सावधानी रखें।

कुंभ: यात्रा मनोरंजक रहेगी। विवाद को बढ़ावा न दें। जल्दबाजी से काम बिगड़ेंगे। भूमि व भवन संबंधी काम लाभ देंगे। धैर्य रखें।

मीन: अशुभ समाचार मिल सकता है। दौड़धूप रहेगी। विवाद को बढ़ावा न दें। वस्तुएं संभालकर रखें। विश्वास को ठेस पहुंच सकती है।

अगर आपको भी है पहाड़ों पर घूमने का शौक तो जरूर जाएं Chocolate Hills

दुनिया में बहुत सी जगहों को देखकर मन में सवाल आता है कि क्या क्या दुनिया में ऐसी भी कोई जगह हो सकती हैं। घूमने-फिरने के शौकिन लोग हमेशा नई और खूबसूरत जगहों की तलाश में रहते हैं। तो आज हम आपको ऐसी ही एक जगहें के बारे में बताने जा रहे हैं जिसे देखकर आप भी उस पर विश्वास नहीं कर पाएंगे। हम बात कर रहे हैं फिलीपींस में स्थित चॉकलेट हिल्स की। प्रकृतिक चमत्कारों में से एक इन हिल्स को देखने के लिए टूरिस्ट दूर-दूर से आते हैं। आइए जानते हैं इन पहाड़ों के बारे में कई और बातें। फिलीपींस बोहोल में स्थित यह पहाड़ कोण शेप में बने हुए हैं, जोकि दूर से चॉकलेट की तरह दिखते हैं। करीब 50 वर्ग मीटर तक फैले इन पहाड़ों की ऊंचाई लगभग 100 से 160 फीट है। यह पहाड़ बोहोल फिलीपींस की राजधानी मनीला से लगभग 700 कि.मीटर दूर दक्षिण में स्थित है।



चूना पत्थर और घास से ढके हुए यह पहाड़ शुष्क मौसम में भूने रंग के दिखाई देते हैं, जिसके कारण इसे चॉकलेट हिल्स भी कहा जाता है। यहां के लोगों का मानना है कि यह पहाड़ छोटे-छोटे पिरामिड हैं, जोकि ग्रहों और ब्रह्मांड के ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संबंध रखते हैं।

कुछ लोगों का मानना तो यह भी है कि यह पहाड़ दो दिग्गजों के लड़ाई करने से बने हैं। उन्होंने अपनी लड़ाई

के दौरान के दूसरे पर चट्टानों, पत्थर और रेत फैकी थी, जिसके कारण यह पहाड़ बन गए। वजह चाहें जो भी हो इन खूबसूरत पहाड़ों को देखने के लिए टूरिस्ट दूर से दूर से आते हैं। यहां पर बने हाइएस्ट पीक पर खड़े होकर लोग दूर तक फैले इन पहाड़ों को देखने के लिए देश-विदेश से आते हैं। सुबह इन पहाड़ों पर रोशनी का नजारा तो और भी खूबसूरत होता है।

11 देशों से होकर गुजरती है दुनिया की यह सबसे लंबी और खूबसूरत नदी

दुनिया में बहुत से झरने नदियां दूर-दूर तक फैले होने और खूबसूरती के कारण जाने जाते हैं। वैसे तो दुनियाभर में कई खूबसूरत नदियां हैं लेकिन आज हम आपको सबसे लंबी और खूबसूरत नदी के बारे में बताने जा रहे हैं। अफ्रीका महाद्वीप में बहने वाली यह नदी करीब 11 देशों से होकर गुजरी है। अपनी लंबाई के कारण इसे दुनिया की सबसे दूसरी बड़ी नदी माना जाता है। तो चलिए जानते हैं इस नदी के बारे में कुछ और बातें।

नॉर्थ-ईस्ट अफ्रीका महाद्वीप में बहने वाली ये नदी विश्व की सबसे लंबी दूसरी नदी है। हालांकि इसकी लंबाई अमेजन नदी से ज्यादा है लेकिन उस नदी की फैलाव ज्यादा होने के कारण उसे ही सबसे लंबी नदी माना जाता है। 6,853



कि.मी लंबी ये नदी दूसरे सबसे बड़े महाद्वीप की सबसे बड़ी झील विक्टोरिया से निकलती हुई सहारा मरुस्थल के पूर्वी भाग को पार करके भूमध्यसागर में गिरती है।

इस भैंसे की कीमत सुनकर हो जाएंगे हैरान, सीमेन से ही हर साल की कमाई 80 लाख रुपये!



रायपुर में आयोजित 5 दिवसीय राष्ट्रीय कृषि मेले में एक भैंसा सभी के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। हरियाणा से आए इस भैंसे को भैंसों का सरताज भी कहा जा सकता है। पांच फीट 9 इंच ऊंचे और 8 फीट लंबे युवराज नाम के इस भैंसे की कीमत 9 करोड़ रुपये से भी अधिक है। युवराज के मालिक का नाम करमवीर है, जो कि हरियाणा के कुरुक्षेत्र के रहने वाले हैं। करमवीर की मानें तो युवराज अब तक देश में भैंसों की 26 से अधिक प्रतियोगिताएं जीत चुके हैं और इस भैंसे के बच्चों की देश भर में बड़ी डिमांड है। इतना ही नहीं करमवीर युवराज के सीमेन से ही हर साल करीब 80 लाख रुपये की कमाई कर लेते हैं। हालांकि युवराज के नखरे भी कुछ कम नहीं हैं। उसे हर दिन 20 लीटर दूध के साथ फल और अन्य खाद्य पदार्थ दिए जाते हैं। युवराज की देखरेख में ही हर दिन करीब तीन हजार रुपये खर्च होते हैं।

11 देशों से होकर गुजरने वाली इस नदी के आस-पास बहुत से खूबसूरत और ऐतिहासिक नगर बने हुए हैं। विक्टोरिया झील से शुरू होने वाली यह नदी सफेद नील और नीली नील के नाम से जानी जाती है। मिस्र की भाषा में नील को इतेरी भी कहा जाता है। इस नदी के आस-पास के गांव इस नदी को तोफहा मानते हैं। मिस्र और अफ्रीका के कई प्राचीन और आधुनिक शहर नील नदी के किनारे पर बसे हुए हैं। सितंबर महीने में इसका जलस्तर बढ़ने के कारण बाढ़ भी आ जाती है, जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसके पास की जमीनें रेतीली होने के कारण यहां खेती भी नहीं की जा सकती है। इसके बावजूद भी लोग इसके किनारे रहना ही पसंद करते हैं।

रोजाना खाएं अदरक का 1 टुकड़ा, मिलेंगे अनगिनत फायदे

अदरक एक भारतीय मसाला है जो हर घर में रोजाना इस्तेमाल होता है। इसकी तासीर गर्म होने के कारण इसका अधिकतर सेवन सर्दियों में किया जाता है। इस मौसम में अदरक खाने से खांसी- जुकाम, बलगम जैसी परेशानियों से बचा जा सकता है। अदरक में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, आयरन, कैल्शियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखने का काम करते हैं। अदरक खाने से कई फायदे होते हैं। आज हम उन्हीं फायदों के बारे में बताएंगे। चलिए जानते हैं एक टुकड़ा अदरक रोजाना खाने से शरीर को किस प्रकार फायदा मिलता है।

1. जी मिचलाना

जी मिचलाना और उल्टी की समस्या को रोकने के लिए अदरक औषधि की तरह का काम करता है। 1 चम्मच अदरक के जूस में 1 चम्मच नींबू का रस मिलाएं। इसको हर दो घंटे बाद पीएं। जल्द ही राहत मिलेगी।

2. गठिया दर्द में राहत

अदरक में एंटी-इन्फ्लेमेट्री प्रॉपर्टीज होती है जो जोड़ों के दर्द को खत्म करने में सहायक है। अदरक को खाने से या इसका लेप लगाने से भी दर्द खत्म होता है। इसका लेप बनाने के लिए अदरक को अच्छे से पीस लें। उसमें हल्दी मिला लें। इस पेस्ट को दिन में दो बार लगाएं। कुछ ही दिनों में फर्क दिखाई देने लगेगा।

3. मासिक धर्म में फायदेमंद

कुछ महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान बहुत दर्द होती है। ऐसे में अदरक



की चाय काफी फायदा पहुंचाती है। इसलिए दिन में 2 बार अदरक की चाय पीएं। इससे दर्द कम होगा।

4. सर्दी- जुकाम और फ्लू

सर्दियों के मौसम में सर्दी-जुकाम और फ्लू जैसी छोटी-मोटी समस्या होना आम है। इससे बचने के लिए नियमित रूप से अदरक का सेवन करें। यह शरीर को गर्म रखता है जिससे पसीना अधिक आता है और शरीर गर्म बना रहता है।

5. माइग्रेन का इलाज

जिन लोगों को माइग्रेन की समस्या है उनके लिए अदरक रामबाण है। जब भी माइग्रेन का अटैक आए, तब अदरक की चाय बना कर पीएं। इसको पीने से माइग्रेन में होने वाले दर्द और उल्टी से काफी हद तक राहत मिलेगी।

6. दिल को स्वस्थ रखें

अदरक कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करने, ब्लड प्रेशर को ठीक रखने, खून को जमने से रोकने का काम करता है। इससे दिल संबंधित बीमारियां भी नहीं होती हैं। इसलिए अपनी डाइट में अदरक को शामिल करें।

7. पाचन तंत्र मजबूत

अदरक पेट फूलने, कब्ज, गैस, एसिडिटी जैसी समस्याओं को ठीक रखने में भी सहायक है। जिन लोगों को पेट से संबंधित समस्याएं रहती हैं वह रोजाना सुबह खाली पेट अदरक का सेवन करें।

8. मोर्निंग सिकनेस

मोर्निंग सिकनेस की समस्या अधिकतर गर्भवती महिलाओं को होती है। रोजाना सुबह अदरक के 1 टुकड़े को चबा कर खाएं। कुछ दिनों तक अदरक खाने से मोर्निंग सिकनेस की समस्या दूर हो जाएगी।

9. ऊर्जा करें प्रदान

सर्दियों में अदरक खाने से शरीर गर्म तो रहता ही है साथ ही उसे एनर्जी भी मिलती है। रोजाना सुबह अदरक वाली चाय पीने से शरीर में चुस्ती- फुर्ती बनी रहेगी।

लड़कियों को जरूर पता होने चाहिए ब्यूटी हैक्स से जुड़े ये 5 ट्रिक्स

लड़कियां खुद को सुंदर दिखाने के लिए हर तरह की कोशिश करती हैं। कुछ लड़कियां खूबसूरत दिखने के लिए ब्यूटी पार्लर तो कुछ घरेलू नुस्खों का सहारा लेती हैं। कई बार ब्यूटी पार्लर या घरेलू नुस्खों के बारे में पता न होने के कारण वो अपनी नुकसान कर बैठती हैं। आज हम आपको ऐसे ही कुछ ब्यूटी हैक्स के बारे में बताते जा रहे हैं जिसे हर लड़की को पता होने चाहिए। इनकी मदद से आप बिना किसी नुकसान के खुद को खूबसूरत बना सकती हैं। इन आसान ब्यूटी हैक्स से आप खुद को और भी सुंदर दिखा सकती हैं। तो चलिए जानते हैं खूबसूरत को बढ़ाने वाले इन ब्यूटी हैक्स के बारे में।



1. बेकिंग सोडा

पीले दांत आपके फर्स्ट इंप्रेशन को खराब कर देते हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए 1 चम्मच बेकिंग सोडा में हाइड्रोजन पेरोक्साइड की 2-3 बूंदें मिलाएं। रोजाना इसे टूथपेस्ट की तरह इस्तेमाल करने से दांतों का पीलापन गायब हो जाएगा।

2. शहद का फेस पैक

शहद में मौजूद एंटीबैक्टीरियल गुण चेहरे के दाग-धब्बों को दूर करने में मदद करते हैं। रोजाना इसे फेस पैक की तरह चेहरे पर लगाने से आपके

दाग-धब्बों और कील-मुंहासों से छुटकारा तो मिलेगा साथ ही इससे यह प्रॉब्लम दोबारा नहीं होगा।

3. चावल का पानी

बालों को सॉफ्ट बनाने के लिए आप कई तरह के हेयर प्रॉडक्ट्स इस्तेमाल करती हैं। इसकी बजाए आप शैंपू के बाद बालों पर 5 मिनट के लिए चावल का पानी लगाएं। इसके बाद सिर को ठंडे पानी से धोएं। इससे आपके बाल नेचुरल कंडीशन हो जाएंगे।

4. पेट्रोलियम जेली

चेहरे पर नेचुरल ग्लो लाने के लिए

आप रोजाना पेट्रोलियम जेली लगाएं। रोजाना चेहरे पर पेट्रोलियम जेली लगाने से आपकी चेहरे की खोई हुई रंगत वापस आ जाएगी।

5. शेविंग

लड़कियां अनचाहे बालों से छुटकारा पाने के लिए शेविंग क्रीम का इस्तेमाल करती हैं, जिसके कारण त्वचा सख्त और रूखी हो जाती है। ऐसे में शेविंग से पहले हेयर कंडीशनर का इस्तेमाल करें।

इससे बाल सॉफ्ट भी रहेंगे और कोई प्रॉब्लम भी नहीं होगी।

यूरिन इन्फेक्शन को जड़ से खत्म करेंगे ये छोटे-छोटे नुस्खे

यूरिन इन्फेक्शन यानी पेशाब करते समय जलन या दर्द होना। यह समस्या स्त्री या पुरुष दोनों को कभी भी हो सकती है। कई बार तो यह समस्या कुछ ही दिनों में ठीक हो जाती है लेकिन बहुत सी बार डॉक्टरों के पास जाने तक की नौबत आ जाती है। हम लोग अक्सर यूरिन इन्फेक्शन को अनदेखा कर देते हैं जो बाद में कई समस्याओं का कारण बनता है। ऐसे आपको चाहिए कि जब भी यूरिन करते समय जलन या दर्द हो तो तुरंत इलाज शुरू कर दें, ताकि बाद में किसी प्रकार की कोई बड़ी बीमारी होने का खतरा टल जाए। आज हम आपको यूरिन इन्फेक्शन के कारण, लक्षण और इसके इलाज के लिए कुछ घरेलू नुस्खे बताएंगे, जिन्हें आप घर पर ही ट्राई करके देख सकते हैं।

यूरिन में जलन के कारण

मूत्र मार्ग में संक्रमण या ब्लैडर में सूजन किडनी में पथरी होना शरीर में पानी की कमी लीवर प्रॉब्लम होना रीढ़ की हड्डी में चोट लगना शुगर की बीमारी होना यूरिन में जलन के लक्षण यूरिन से स्मेल आना ब्लैडर में दर्द रहना बार-बार यूरिन आना यूरिन का रंग पीला हो जाना बूंद-बूंद पेशाब आना पेट और मूत्र मार्ग में जलन चलिए आपको बताते हैं पेशाब करते समय जलन और दर्द के कुछ घरेलू इलाज:-

1. अधिक पानी पीना

अगर यूरिन लग कर आ रहा है तो हर एक घंटे में पानी का गिलास पीएं। इससे ब्लैडर में जमा हुए बैक्टीरिया बाहर निकल जाएंगे

और शरीर में पानी की कमी भी नहीं होगी।

2. सिट्रिक एसिड युक्त फल

जिन फलों और सब्जियों में सिट्रिक एसिड की मात्रा अधिक होती है, उनका सेवन करें। यह एसिड यूरिन इन्फेक्शन बनाने वाले बैक्टीरिया को खत्म कर देता है। ऐसे में खट्टे फल यानी नींबू, मौसमी अन्य आदि का सेवन करें।

3. नारियल पानी पीएं

नारियल पानी पीने से भी यूरिन के दौरान होने वाली जलन कम हो सकती है। साथ ही रोजाना नारियल पानी पीने से शरीर को पानी और मिनरल्स भरपूर मात्रा में मिलते हैं।

4. चावल का पानी

आधा गिलास चावल के पानी में चीनी मिलाकर पीने से यूरिन में होने वाली जलन कम हो सकती है।

5. बादाम और इलायची

बादाम की 5 गिरि में 7 छोटी इलायची और मिसरी डालकर पीस लें। फिर इसे पानी में घोलकर पीएं। इससे दर्द और जलन कम होती है।

यूरिन इन्फेक्शन के आयुर्वेदिक उपचार

1. आंवला और इलायची

आंवले का चूर्ण में इलायची मिलाकर पानी के साथ पीएं। इससे यूरिन की जलन कम होगी।

2. बेकिंग सोडा और पानी

अगर यूरिन इन्फेक्शन के दौरान बार-बार पेशाब आए तो 1 गिलास पानी में 1 चम्मच सोडा मिलाकर पीएं। इससे एसिडिटी और जलन की समस्या कम होगी।

3. गेहूं और मिसरी

रात को सोने से पहले 1 मुट्ठी गेहूं को पानी में भिगोएं और सुबह उसी पानी को छान लें। फिर उसमें मिसरी मिलाकर खाएं।



...अनुष्का शर्मा की बढ़ी मुसीबत

आजकल वेब सीरीज का जमाना है और हर दूसरे दिन एक वेब सीरीज रिलीज हो रही है। लोकडाउन चल रहा है और लोग वेब सीरीज के साथ इंजॉय कर रहे हैं। हाल ही में आई वेब सीरीज 'पाताल लोक' लोगों का काफी पसंद आ रही है लेकिन 'पाताल लोक' की प्रड्यूसर अनुष्का शर्मा के चलते इस वेब सीरीज को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। बता दें कि 'पाताल लोक' में जातिवादी टिप्पणी को लेकर पहले एक वकील ने अनुष्का शर्मा को लीगल नोटिस भेजा था। अब बीजेपी विधायक नंद किशोर गुर्जर ने लोनी थाने में अनुष्का शर्मा के खिलाफ शिकायत दी है। विधायक नंद किशोर गुर्जर का आरोप है कि 'पाताल लोक' के एक अपराधी किस्म के किरदार के साथ उनकी तस्वीर को मॉर्फ करके लगाया गया है और गुर्जर समाज को आपत्तिजनक बातें भी कही हैं।

रणवीर ने पूरा नहीं किया दीपिका से अपना वादा

बॉलीवुड में अगर सबसे अच्छे कपल्स की बात की जाए तो रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण का नाम जरूर शामिल होगा। रणवीर को हमेशा ऐसा पति माना जाता है जो कोई भी लड़की अपनी जिंदगी में चाहेगी। रणवीर ने यह बात कई बार साबित भी की है। हालांकि भले ही रणवीर कितने ही अच्छे पति और बॉयफ्रेंड क्यों न रहे हों लेकिन उन्होंने अभी तक दीपिका से किया अपना एक वादा पूरा नहीं किया है। हाल में भारतीय फुटबॉल टीम के कैप्टन सुनील छेत्री के साथ हुई इंस्टाग्राम चैट में रणवीर ने इस बात का खुलासा किया। उन्होंने कहा, मैं दीपिका और उनके परिवार के लोगों को ड्रेस करने के लिए डींगे मारा करता था कि मैं बहुत अच्छा बटर चिकन बनाता हूँ। मैं ये भी कहता था कि जब मैं यूएस में यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करता था तो पूरे शहर में सबसे अच्छा बटर चिकन बनाता था और भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान और बांग्लादेश के लोग भी मेरे दरवाजे पर चिकन खाने के लिए खड़े रहते थे। हालांकि रणवीर ने दीपिका और उनके परिवार को अपने हाथ का बटर चिकन खिलाने का वायदा पूरा नहीं किया। इस पर बात करते हुए उन्होंने कहा, मैंने चिकन तो खिलाया लेकिन इसमें चीटिंग की थी। मैंने उसे रेडीमेड मिक्स डालकर तैयार किया था।

गर्लफ्रेंड की अलमारी में छिप गए थे सलमान खान

सुपरस्टार सलमान खान बॉलीवुड के सबसे पॉप्युलर ऐक्टर्स में से एक हैं। फैस उनकी एक झलक पाने को बेताब रहते हैं। रोमांस हो, कॉमिडी हो या फिर कोई और जॉनर, लोग उन्हें हर तरह के किरदार में देखना पसंद करते हैं। फिल्मों से हटकर बात करें तो सलमान अपनी प्राइवेट लाइफ को लेकर भी सुर्खियों में रहते हैं। उन्होंने अब तक ऐश्वर्या राय, संगीता बिजलानी, सोमी अली समेत कई लोगों को डेट किया है और उनके रिलेशनशिप हमेशा चर्चा में रहे हैं। एक गेम शो के दौरान ऐक्टर ने बताया था कि एक बार वह गर्लफ्रेंड की अलमारी में छिपे थे लेकिन पकड़ लिए गए थे। दरअसल, सलमान ने उस वक्त पुराने दिनों को याद किया जब श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव अपनी फिल्म 'स्त्री' का प्रमोशन करने उनके शो पर पहुंचे थे। सलमान ने बताया कि एक बार उनकी गर्लफ्रेंड के पैरेंट्स अचानक घर पहुंच गए। ऐसे में उन्हें खुद को छिपाना था। सलमान के मुताबिक, वह तुरंत गर्लफ्रेंड की अलमारी में छिप गए लेकिन रंगे हाथों पकड़े गए क्योंकि अलमारी के अंदर धूल भरी थी और इस वजह से वह जोर से छींक दिए। हालांकि, अच्छी बात यह रही है कि गर्लफ्रेंड के पिता को सलमान पसंद आए और इस कारण कोई बड़ी दिक्कत नहीं हुई।

